पाठ–7

अभिलाषा

माखनलाल चतुर्वेदी

कवि परिचय

जन्म– 1889

मृत्यु–1968

राष्ट्रीय धारा के कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी एक 'भारतीय आत्मा' की संज्ञा से अभिहित हैं। उनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक स्थान पर हुआ था। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंजीरों को तोड़कर बाहर आए।

प्रकृति और देश प्रेम का सम्मिश्रण आपकी रचनाओं की प्रमुख विशेषता है। त्याग और बलिदान की भावना से वे मातृभूमि को अलंकृत करने के पक्षधर थे। चतुर्वेदी के काव्य में कहीं करुणा की दर्दभरी पुकार मुखर है, तो कहीं पौरुष की हुंकार, तो कहीं ज्वालामुखी का धधकता स्वर सुनायी पड़ता है।

कृतियाँ

हिमकिरीटनी, हिमतरंगिनी, युगचरण, समर्पण, वेणुलो गूँजे धरा, मरणज्वार(काव्य) कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पाँव, अमीर इरादे : गरीब इरादे (गद्य)

चतुर्वेदी की हिमतरंगिनी को प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा भारत सरकार ने 1963 में पद्मभूषण उपाधि से अलंकृत किया ।

पाठ परिचय

इस पाठ में कवि पुष्प एवं पर्वत के माध्यम से राष्ट्र प्रेम और परोपकार की महत्ता को प्रतिष्ठित करता है। पुष्प के द्वारा देश की रक्षार्थ तत्पर सैनिकों के पैरों से कुचलने को देवताओं के सिर पर चढ़ने से अधिक सौभाग्यशाली मानना, वीरों के प्रति सच्ची श्रद्धा का भाव उत्पन्न करता है। वहीं पर्वत की अभिलाषा में मातृभूमि को हरा–भरा करने को मणि–माणक प्रकटाने से ज्यादा महनीय बताना, पाठक के मन में परोपकारी जीवन की सार्थकता प्रमाणित करता है।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर,
हे हरि! डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर,
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

पर्वत की अभिलाषा

तू चाहे हरि, मुझे स्वर्ण का
मढ़ा सुमेरु बनाना मत,
चाहे मेरी गोद–खोद कर,
मणि–माणक प्रगटाना मत,
लावण्य–लाडली वन देवी का,

लीला–क्षेत्र बनाना मत,
जगती–तल का मल धोने को,
भू हरी भरी कर देने को
गंगा–यमुना मैं बहा सकूँ,
यह देना, देर लगाना मत।।

शब्दार्थ

चाह– इच्छा,
सुरबाला– अप्सराएँ
इठलाऊँ– गर्व करना
जगती तल – मातृ भूमि के चरण
गूँथा– एक धागे से बंधना
मढ़ा– चारों तरफ से घिरा हुआ,
मणि–माणक – बहुमूल्य रत्न
लावण्य– सुन्दरता
हरि – भगवान
सुमेरु– पुराण के अनुसार पृथ्वी के मध्य का ऊँचा पर्वत

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गंगा का पर्याय शब्द है

(क) कालिन्दी (ख) सूर्यजा

(ग) मन्दाकिनी (घ) कृष्णा

2. पुष्प का पर्यायवाची शब्द नहीं है

(क) निहार (ख) प्रसून

(ग) सुमन (घ) गुल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3 पुष्प किसके गहनों में गूंथे जाने की चाह नहीं रखता है?

4 देवताओं के सिर पर चढ़ पुष्प क्या नहीं चाहता है?

5 वनमाली से किस पथ पर फेंक देने का कहता है?

6. पर्वत किससे मढ़ा नहीं बनना चाहता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7 पर्वत मणि–माणक क्यों प्रगटाना नहीं चाहता है?

8 पर्वत गंगा–यमुना बहा कर क्या अभिलाषा रखता है?

9 निम्न को समझाइये ।

स्वर्ण मढ़ा सुमेरू, मणि माणक, वन देवी का लीला क्षेत्र

निबन्धात्मक प्रश्न

10 पुष्प की अभिलाषा' के माध्यम से कवि क्या सन्देश दे रहा है?

11 व्याख्या कीजिए –

चाह नहीं देवों के सिर पर .....

..... जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

12 कविता को कंठस्थ कर सस्वर सुनाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. ग

2. क